Research Paper IMPACT FACTOR VALUE : 6.247 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 12 | ISSUE : 7 | JULY 2026

आधुनिक युग में रामचरितमानस की प्रासंगिकता: एक समालोचनात्मक अध्ययन

पूजा शर्मा [1]

[1] **मानविकी विभाग, महर्षि मारकंडेश्वर (मानक) विश्वविद्यालय मुलाना, अंबाला, हरियाणा.**

ABSTRACT:

भारत के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन में श्री रामचरितमानस का स्थान आज भी उतना ही जीवंत और प्रासंगिक है जितना सोलहवी शताब्दी में था I यह केवल एक काव्यग्रंथ नही है बल्कि एक जीवन दर्शन समाजिक संहिता और आध्यात्मिक मार्गदर्शक है जो समय की हर परत को छूता हुआ आज भी मानव के मन को झकझोरता है I रामचरितमानस भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन और लोकजीवन का एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसने सदियों से समाज के नैतिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित किया है। फिर भी इसके अनेक आदर्श-जैसे सत्य, मर्यादा, कर्तव्यपरायणता, करुणा, सहिष्णुता, लोककल्याण, सुशासन और मानवीय संवेदनाएँ-आज भी समाज के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

वर्तमान समय विज्ञान, प्रौद्योगिकी, वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद तथा तीव्र सामाजिक परिवर्तनों का युग है। ऐसे समय में मनुष्य अनेक नैतिक, मानसिक और सामाजिक चुनौतियों का सामना कर रहा है। इन परिस्थितियों में रामचरितमानस केवल धार्मिक ग्रंथ के रूप में नहीं, बल्कि जीवन-मूल्यों के मार्गदर्शक के रूप में भी महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है। इसके साथ ही आधुनिक स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श, मानवाधिकार, लोकतांत्रिक मूल्यों तथा समानता की दृष्टि से इसके कुछ प्रसंगों पर प्रश्न भी उठाए गए हैं। इसलिए इसकी प्रासंगिकता का मूल्यांकन केवल श्रद्धा के आधार पर नहीं, बल्कि आलोचनात्मक एवं वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण से किया जाना आवश्यक है।इस शोध-पत्र में रामचरितमानस के सकारात्मक पक्षों तथा उसकी सीमाओं दोनों का संतुलित विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि यद्यपि समय के साथ सामाजिक मान्यताओं में परिवर्तन आया है, फिर भी रामचरितमानस में निहित अनेक मानवीय और नैतिक मूल्य आज भी समाज को दिशा प्रदान करने की क्षमता रखते हैं। अतः इसकी प्रासंगिकता को आधुनिक संदर्भों में पुनर्परिभाषित एवं पुनर्पाठ की आवश्यकता है।

KEYWORDS:

रामचरितमानस, आधुनिक युग, प्रासंगिकता, समालोचना, तुलसीदास, नैतिक मूल्य, भारतीय संस्कृति, स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श, लोकमंगल।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
25th July 2026	26th July 2026
PAPER DOI NO:	**PAPER DOI LINK:**
10.5281/zenodo.21569463	https://zenodo.org/records/21569463

प्रस्तावना

भारतीय साहित्य की परंपरा में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस एक ऐसा महाकाव्य है जिसने केवल साहित्यिक जगत को ही नहीं, बल्कि भारतीय समाज, संस्कृति, धर्म और लोकजीवन को भी गहराई से प्रभावित किया है। अवधी भाषा में रचित यह ग्रंथ भारतीय जनमानस का अभिन्न अंग बन चुका है। इसकी लोकप्रियता का कारण केवल इसका धार्मिक स्वरूप नहीं है, बल्कि इसमें निहित मानवीय मूल्य, आदर्श चरित्र, लोककल्याण की भावना तथा जीवन-दर्शन भी हैं। तुलसीदास ने रामचरितमानस के माध्यम से भगवान राम के चरित्र को मर्यादा, न्याय, करुणा, सत्य, त्याग और कर्तव्य के आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि यह ग्रंथ अनेक शताब्दियों से समाज के नैतिक निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है।

आधुनिक युग विज्ञान, तकनीक, वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद, डिजिटल संचार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सामाजिक गतिशीलता और लोकतांत्रिक चेतना का युग है। आज व्यक्ति के सामने आर्थिक विकास के साथ-साथ नैतिक पतन, पारिवारिक विघटन, मानसिक तनाव, सामाजिक असमानता, पर्यावरण संकट, सांस्कृतिक विखंडन तथा मानवीय संवेदनाओं के क्षरण जैसी गंभीर चुनौतियाँ उपस्थित हैं। ऐसे समय में यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि लगभग पाँच सौ वर्ष पूर्व रचित रामचरितमानस आज के समाज के लिए कितनी प्रासंगिक है।

इस प्रश्न का उत्तर सरल नहीं है, क्योंकि रामचरितमानस को लेकर समाज में दो प्रकार की धाराएँ दिखाई देती हैं। एक पक्ष इसे भारतीय संस्कृति, नैतिकता और मानवीय मूल्यों का सर्वोत्तम ग्रंथ मानता है तथा इसकी शिक्षाओं को आज भी जीवनोपयोगी मानता है। दूसरे पक्ष के अनुसार इस ग्रंथ के कुछ प्रसंग आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों, लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय तथा जातीय समता के संदर्भ में पुनर्विचार की अपेक्षा रखते हैं। इसलिए रामचरितमानस का अध्ययन केवल आस्था के आधार पर नहीं, बल्कि समालोचनात्मक दृष्टि से किया जाना अधिक उपयुक्त है।इस अध्ययन का उद्देश्य किसी ग्रंथ का केवल गुणगान या केवल आलोचना करना नहीं होता, बल्कि उसके गुणों, सीमाओं और समकालीन उपयोगिता का संतुलित एवं तर्कपूर्ण विश्लेषण करना होता है। इसी दृष्टि से यह शोध-पत्र रामचरितमानस के नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, पारिवारिक और मानवीय पक्षों का आधुनिक संदर्भ में मूल्यांकन करेगा। साथ ही स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श, मानवाधिकार, लोकतांत्रिक मूल्यों और आधुनिक आलोचना के आलोक में भी इसकी समीक्षा प्रस्तुत करेगा।

तुलसीदास का युग राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक विषमता तथा धार्मिक तनाव का समय था। ऐसे समय में उन्होंने समाज को सांस्कृतिक एकता और नैतिक आधार प्रदान करने का प्रयास किया। आज परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं, परंतु मनुष्य की मूल समस्याएँ-अहंकार, हिंसा, लोभ, अन्याय, असहिष्णुता और नैतिक संकट-अब भी विद्यमान हैं। यही कारण है कि रामचरितमानस के अनेक संदेश आज भी प्रेरणादायी प्रतीत होते हैं। दूसरी ओर आधुनिक समाज समानता, स्वतंत्रता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और संवैधानिक मूल्यों पर आधारित है, इसलिए ग्रंथ के कुछ प्रसंगों का पुनर्पाठ भी आवश्यक हो जाता है।

वर्तमान शोध का उद्देश्य रामचरितमानस को न तो केवल धार्मिक श्रद्धा का विषय मानना है और न ही आधुनिक आलोचनाओं के आधार पर पूरी तरह अस्वीकार करना। इसका उद्देश्य

यह समझना है कि इस ग्रंथ के कौन-से मूल्य आज भी समाज के लिए उपयोगी हैं, किन विचारों को ऐतिहासिक संदर्भ में समझने की आवश्यकता है तथा किन पक्षों की आधुनिक दृष्टि से पुनर्व्याख्या की जानी चाहिए। इस प्रकार यह अध्ययन परंपरा और आधुनिकता के बीच संवाद स्थापित करने का प्रयास करता है।

रामचरितमानस का परिचय

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस हिंदी साहित्य का एक अद्वितीय महाकाव्य है, जिसने भारतीय समाज, संस्कृति, धर्म और लोकजीवन को गहराई से प्रभावित किया है। इसकी रचना विक्रम संवत् 1631 (लगभग 1574 ई.) में अवधी भाषा में प्रारंभ हुई मानी जाती है। तुलसीदास ने संस्कृत की वाल्मीकि रामायण को आधार बनाते हुए भारतीय जनमानस के लिए सरल, सहज और लोकभाषा में रामकथा का पुनर्सृजन किया। इस कारण रामचरितमानस केवल धार्मिक ग्रंथ न रहकर लोकजीवन, नैतिकता, संस्कृति और दर्शन का महत्त्वपूर्ण दस्तावेज बन गया।

'रामचरितमानस' शब्द का अर्थ है-भगवान राम के चरित्र रूपी पवित्र मानस सरोवर। तुलसीदास ने इस ग्रंथ के माध्यम से भगवान श्रीराम को केवल ईश्वर के रूप में नहीं, बल्कि आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श मित्र, आदर्श राजा और आदर्श मानव के रूप में प्रस्तुत किया है। इसी कारण यह ग्रंथ भारतीय समाज में जीवन-दर्शन का मार्गदर्शक माना जाता है।रामचरितमानस सात काण्डों में विभाजित है-बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुंदरकाण्ड, लंकाकाण्ड और उत्तरकाण्ड। प्रत्येक काण्ड जीवन के किसी न किसी नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक पक्ष को उद्घाटित करता है।

बालकाण्ड में भगवान राम के जन्म, बाल-लीलाओं, गुरु आश्रम में शिक्षा, विश्वामित्र के साथ प्रस्थान, ताड़का-वध, अहल्या उद्धार तथा सीता-स्वयंवर का वर्णन है। इस काण्ड में धर्म, करुणा, गुरु-भक्ति, शक्ति और आदर्श संस्कारों का प्रतिपादन मिलता है। राम और सीता का विवाह भारतीय पारिवारिक एवं सांस्कृतिक आदर्शों का प्रतीक माना गया है।

अयोध्याकाण्ड रामचरितमानस का सबसे मार्मिक भाग है। इसमें राम के वनवास, भरत की भ्रातृ-भक्ति, दशरथ की मृत्यु, कैकेयी के मोह तथा परिवार और राज्य के बीच कर्तव्य की स्थापना का अत्यंत भावपूर्ण चित्रण मिलता है। राम का बिना किसी विरोध के पिता की आज्ञा स्वीकार करना उनके मर्यादा-पुरुषोत्तम स्वरूप को स्थापित करता है। भरत का त्याग और राम के प्रति समर्पण भारतीय पारिवारिक मूल्यों का उत्कृष्ट उदाहरण है।

अरण्यकाण्ड में वन-जीवन, ऋषि-मुनियों की रक्षा, शूर्पणखा प्रसंग, खर-दूषण वध तथा सीता-हरण का वर्णन है। इस काण्ड में प्रकृति का अत्यंत सुंदर चित्रण मिलता है। तुलसीदास ने वन, पर्वत, नदी, वृक्ष और जीव-जंतुओं के माध्यम से मनुष्य और प्रकृति के सामंजस्य को अभिव्यक्त किया है। आधुनिक पर्यावरणीय दृष्टि से यह काण्ड विशेष महत्त्व रखता है।

किष्किन्धाकाण्ड में राम और सुग्रीव की मित्रता, बाली-वध तथा सीता की खोज की योजना का वर्णन है। यह काण्ड मित्रता, सहयोग, नेतृत्व और न्यायपूर्ण शासन की भावना को स्थापित करता है। सुग्रीव और हनुमान के साथ राम का व्यवहार यह दर्शाता है कि नेतृत्व का आधार विश्वास, सहयोग और समान उद्देश्य होना चाहिए।

सुंदरकाण्ड को रामचरितमानस का हृदय कहा जाता है। इसमें हनुमान के साहस, बुद्धिमत्ता, निष्ठा, सेवा-भाव, आत्मविश्वास और कर्तव्यपरायणता का अनुपम चित्रण है। हनुमान का समुद्र लाँघना, अशोक वाटिका पहुँचना, सीता को आश्वस्त करना और लंका दहन करना यह संदेश देता है कि दृढ़ संकल्प, आत्मबल और भक्ति से असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं। आधुनिक जीवन में संघर्ष, नेतृत्व और सकारात्मक सोच के संदर्भ में सुंदरकाण्ड अत्यंत प्रेरणादायक है।

लंकाकाण्ड में राम-रावण युद्ध, रावण का वध तथा धर्म की अधर्म पर विजय का वर्णन है। यहाँ राम केवल योद्धा नहीं, बल्कि न्यायप्रिय शासक और धर्म के संरक्षक के रूप में दिखाई देते हैं। यह काण्ड बताता है कि शक्ति का प्रयोग केवल लोककल्याण और न्याय की स्थापना के लिए होना चाहिए।

उत्तरकाण्ड में रामराज्य, सीता-निर्वासन, लव-कुश प्रसंग तथा राम के लोककल्याणकारी शासन का वर्णन है। रामराज्य का चित्रण भारतीय राजनीतिक चिंतन में आदर्श शासन-व्यवस्था का प्रतीक माना जाता है, जहाँ न्याय, समानता, सुरक्षा और समृद्धि का वातावरण होता है। हालांकि सीता-निर्वासन जैसे प्रसंग आधुनिक स्त्री-विमर्श और मानवाधिकार की दृष्टि से गंभीर बहस का विषय भी हैं। यही कारण है कि उत्तरकाण्ड रामचरितमानस की आधुनिक समालोचनात्मक समीक्षा का महत्वपूर्ण आधार बनता है।

भाषा की दृष्टि से रामचरितमानस अवधी की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में गिनी जाती है। इसमें दोहा, चौपाई, सोरठा तथा छंदों का अत्यंत प्रभावशाली प्रयोग हुआ है। तुलसीदास की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण, संगीतात्मक तथा लोकजीवन से जुड़ी हुई है। उन्होंने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और लोकभाषा के शब्दों का संतुलित प्रयोग करके इसे जनसाधारण के लिए सुबोध बनाया।काव्यगत दृष्टि से रामचरितमानस में रस, अलंकार, बिंब, प्रतीक, संवाद, चरित्र-चित्रण तथा प्रकृति-वर्णन की उत्कृष्ट योजना मिलती है। करुण, वीर, शृंगार, शांत और भक्ति रस का अत्यंत प्रभावशाली समन्वय इसकी कलात्मकता को समृद्ध बनाता है। राम, सीता, भरत, लक्ष्मण, हनुमान, विभीषण और रावण जैसे पात्र केवल कथा के पात्र नहीं हैं, बल्कि मानवीय गुणों और अवगुणों के प्रतीक भी हैं।

समालोचनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो रामचरितमानस अपने समय की सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का प्रतिनिधि ग्रंथ है। इसलिए इसके अनेक विचार उस युग की मान्यताओं से प्रभावित हैं। आधुनिक लोकतांत्रिक, नारीवादी और दलित विमर्श के संदर्भ में इसके कुछ प्रसंगों पर प्रश्न उठाए जाते हैं। दूसरी ओर इसके नैतिक आदर्श, लोकमंगल की भावना, मानवीय करुणा, कर्तव्यनिष्ठा, सुशासन, सामाजिक समरसता तथा सांस्कृतिक एकता जैसे मूल्य आज भी प्रासंगिक बने हुए हैं।

अतः रामचरितमानस केवल धार्मिक आस्था का ग्रंथ नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता, संस्कृति, साहित्य, दर्शन और लोकचेतना का ऐसा महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है, जिसका अध्ययन आधुनिक संदर्भों में भी निरंतर नई अर्थवत्ता प्रदान करता है। इसकी रचनात्मक संरचना, चरित्र-योजना, भाषा-सौंदर्य और जीवन-दर्शन इसे कालजयी कृति के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं।

आधुनिक युग की अवधारणा

'आधुनिक युग' केवल समय का बोध कराने वाला शब्द नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी विचारधारा का प्रतीक है जिसमें परिवर्तन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तर्कशीलता, लोकतांत्रिक चेतना, मानवाधिकार, समानता, स्वतंत्रता तथा वैश्विक दृष्टि का समावेश होता है। आधुनिकता का अर्थ केवल नवीन तकनीकों या वैज्ञानिक उपलब्धियों से नहीं है, बल्कि मनुष्य के चिंतन, जीवन-मूल्यों, सामाजिक संरचना तथा सांस्कृतिक दृष्टिकोण में आए व्यापक परिवर्तन से भी है। इसलिए आधुनिक युग की अवधारणा को समझे बिना रामचरितमानस की प्रासंगिकता का समुचित मूल्यांकन संभव नहीं है।आधुनिक युग का आरंभ विश्व स्तर पर औद्योगिक क्रांति, वैज्ञानिक क्रांति तथा प्रबोधन आंदोलन के बाद माना जाता है। भारत में आधुनिकता का विकास उन्नीसवीं शताब्दी में सामाजिक सुधार आंदोलनों, अंग्रेज़ी शिक्षा, राष्ट्रवादी चेतना तथा स्वतंत्रता आंदोलन के प्रभाव से हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय संविधान ने लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक न्याय, समान अवसर तथा मौलिक अधिकारों को स्वीकार कर आधुनिक भारतीय समाज की आधारभूमि तैयार की।

वर्तमान समय विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता , डिजिटल संचार, सोशल मीडिया, वैश्वीकरण तथा बाज़ारवाद ने मानव जीवन को अभूतपूर्व गति प्रदान की है। आज व्यक्ति विश्व के किसी भी भाग से तत्काल संपर्क स्थापित कर सकता है तथा ज्ञान और सूचना तक सरलता से पहुँच सकता है। इन उपलब्धियों ने जीवन को सुविधाजनक बनाया है, परंतु इसके साथ अनेक नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं।आधुनिक समाज में तीव्र प्रतिस्पर्धा, उपभोक्तावाद, भौतिकतावाद तथा व्यक्तिवाद का प्रभाव निरंतर बढ़ रहा है। आर्थिक सफलता को जीवन का प्रमुख लक्ष्य मानने की प्रवृत्ति के कारण नैतिक मूल्यों, पारिवारिक संबंधों तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों की उपेक्षा देखने को मिलती है। संयुक्त परिवारों का विघटन, वृद्धजनों की उपेक्षा, मानसिक तनाव, अवसाद, सामाजिक अकेलापन तथा जीवन में असंतोष जैसी समस्याएँ आधुनिक जीवन की प्रमुख चुनौतियाँ बन गई हैं। वर्तमान युग की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता लोकतांत्रिक चेतना है। आज प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, शिक्षा, न्याय तथा सम्मानजनक जीवन का अधिकार प्राप्त है। जाति, लिंग, धर्म, भाषा तथा वर्ग के आधार पर होने वाले भेदभाव को अस्वीकार्य माना जाता है। इसी कारण आधुनिक समाज प्राचीन ग्रंथों का मूल्यांकन भी मानवाधिकार, समानता और सामाजिक न्याय के आधार पर करता है। रामचरितमानस के अध्ययन में भी यही दृष्टिकोण अपनाया जाता है।

स्त्री-विमर्श

सीता भारतीय साहित्य की सबसे महत्त्वपूर्ण नायिकाओं में से एक हैं। वे केवल आदर्श पत्नी

नहीं, बल्कि साहस, धैर्य, आत्मसम्मान और नैतिक शक्ति की प्रतीक हैं। रावण के समक्ष उनका अडिग आत्मविश्वास तथा विपरीत परिस्थितियों में भी अपने स्वाभिमान की रक्षा करना उनके सशक्त व्यक्तित्व का परिचायक है।उर्मिला का त्याग भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। लक्ष्मण के वनगमन के बाद उनका मौन त्याग परिवार और समाज के लिए किए गए अप्रकट बलिदान का प्रतीक है। आधुनिक आलोचना ने उर्मिला के चरित्र को नई दृष्टि से पुनर्मूल्यांकित किया है।कैकेयी का चरित्र यह संकेत देता है कि गलत सलाह, असुरक्षा और मोह व्यक्ति से गंभीर भूल करवा सकते हैं। आधुनिक मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उनका अध्ययन अत्यंत रोचक माना जाता है।समालोचनात्मक दृष्टि से यह भी स्वीकार करना आवश्यक है कि रामचरितमानस के कुछ प्रसंग, विशेषकर सीता-निर्वासन, आधुनिक स्त्री-अधिकारों और लैंगिक समानता की दृष्टि से विवादास्पद माने जाते हैं। अनेक नारीवादी आलोचकों ने इस प्रसंग की आलोचना की है। वहीं कुछ विद्वानों का मत है कि इसे तत्कालीन राजधर्म और सामाजिक संदर्भों में समझना चाहिए। इसलिए इस विषय पर एकपक्षीय निष्कर्ष के स्थान पर संतुलित दृष्टिकोण अधिक उपयुक्त है।अतः रामचरितमानस का स्त्री-विमर्श यह स्पष्ट करता है कि इसमें स्त्री के अनेक प्रेरक रूप उपस्थित हैं, किन्तु आधुनिक समाज में इसकी पुनर्व्याख्या समानता, गरिमा और संवैधानिक मूल्यों के आलोक में की जानी चाहिए। यही इसकी समकालीन प्रासंगिकता हैआधुनिक युग की एक प्रमुख वैचारिक धारा है। आज महिलाओं की शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता, राजनीतिक भागीदारी तथा सामाजिक समानता पर विशेष बल दिया जाता है। इस कारण साहित्यिक ग्रंथों में नारी के चित्रण का पुनर्मूल्यांकन किया जा रहा है। रामचरितमानस में सीता, उर्मिला, कौशल्या, कैकेयी, शबरी और तारा जैसे पात्रों का आधुनिक स्त्री-विमर्श के आलोक में अध्ययन नई व्याख्याओं को जन्म देता है। वहीं कुछ विवादित पंक्तियाँ और प्रसंग आलोचना का विषय भी बनते हैं।

दलित-विमर्श

बीसवीं और इक्कीसवीं शताब्दी में दलित-विमर्श हिंदी साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक धारा के रूप में विकसित हुआ है। इसका उद्देश्य सामाजिक समानता, मानवीय गरिमा तथा ऐतिहासिक रूप से वंचित समुदायों के अधिकारों की स्थापना करना है। आधुनिक भारतीय संविधान भी समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व तथा सामाजिक न्याय को राष्ट्र की आधारशिला मानता है। ऐसे में रामचरितमानस का अध्ययन दलित-विमर्श की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाता है।गोस्वामी तुलसीदास ने अपने समय की सामाजिक संरचना के भीतर रहते हुए अनेक ऐसे प्रसंग प्रस्तुत किए हैं जो सामाजिक समरसता और मानवीय समानता का संदेश देते हैं। श्रीराम का चरित्र विशेष रूप से इस दृष्टि से उल्लेखनीय है कि वे व्यक्ति का मूल्य उसकी जाति, वंश अथवा सामाजिक स्थिति से नहीं, बल्कि उसके प्रेम, आचरण और भक्ति से निर्धारित करते हैं।

निषादराज गुह: मित्रता और सामाजिक समानता

वनगमन के समय श्रीराम की सबसे पहले जो आत्मीय सहायता करते हैं, वे निषादराज गुह हैं। श्रीराम उन्हें केवल सहयोगी नहीं मानते, बल्कि अपने प्रिय मित्र के रूप में स्वीकार करते हैं। यह प्रसंग इस बात का प्रतीक है कि सच्चे संबंध जन्म से नहीं, बल्कि विश्वास और प्रेम से बनते हैं।आधुनिक लोकतांत्रिक समाज में सामाजिक समरसता का यही सिद्धांत अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। जातीय भेदभाव, सामाजिक दूरी और ऊँच-नीच की भावना आज भी अनेक क्षेत्रों में विद्यमान है। ऐसे समय में राम और निषादराज की मित्रता समानता और मानवीय सम्मान का प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत करती है।

केवट प्रसंग: सेवा और मानवीय गरिमा

केवट प्रसंग रामचरितमानस का अत्यंत लोकप्रिय प्रसंग है। केवट अत्यंत विनम्रता और भक्ति के साथ श्रीराम की सेवा करता है। यह प्रसंग केवल भक्ति का वर्णन नहीं करता, बल्कि श्रम की गरिमा और सेवा के सम्मान का भी संदेश देता है।आधुनिक समाज में प्रत्येक श्रम का सम्मान लोकतांत्रिक मूल्यों का आधार है। किसी भी व्यक्ति का सम्मान उसके कार्य की प्रकृति से नहीं, बल्कि उसके मानवीय अस्तित्व से होना चाहिए। केवट प्रसंग इसी विचार को सांस्कृतिक आधार प्रदान करता है।

शबरी: भक्ति और समानता का आदर्श

शबरी का प्रसंग रामचरितमानस के सर्वाधिक प्रेरणादायक प्रसंगों में से एक है। शबरी समाज के वंचित वर्ग से आती हैं, किंतु उनकी भक्ति, प्रेम और समर्पण के कारण श्रीराम उनके आश्रम में जाते हैं और उनका आदर करते हैं।शबरी प्रसंग का मुख्य संदेश यह है कि ईश्वर के समक्ष जन्म, जाति और सामाजिक प्रतिष्ठा का नहीं, बल्कि प्रेम, श्रद्धा और निष्कपट भावना का महत्त्व है। आधुनिक मानवाधिकार की दृष्टि से भी यह प्रसंग सामाजिक समावेशन का प्रतीक माना जा सकता है।आज जब समाज जातीय तनाव, सामाजिक विभाजन तथा भेदभाव जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब शबरी का प्रसंग सामाजिक सद्भाव और समरसता की प्रेरणा देता है।इस प्रकार दलित-विमर्श और सामाजिक न्याय की अवधारणा ने आधुनिक साहित्यिक आलोचना को नई दिशा प्रदान की है। आधुनिक युग में प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा और समानता को सर्वोच्च मूल्य माना जाता है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि परंपरागत ग्रंथों का अध्ययन उनके ऐतिहासिक संदर्भ के साथ-साथ समकालीन सामाजिक दृष्टि से भी किया जाए। इससे उनकी सीमाएँ और संभावनाएँ दोनों स्पष्ट होती हैं।

विभीषण: योग्यता का सम्मान

विभीषण राक्षस कुल में जन्म लेने के बाद भी धर्म, सत्य और न्याय का पक्ष ग्रहण करते हैं। श्रीराम उन्हें सम्मान देते हैं और लंका का राजा बनाते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति का मूल्य उसके जन्म से नहीं, बल्कि उसके चरित्र और कर्म से निर्धारित होना चाहिए।आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी योग्यता नैतिकता और सार्वजनिक उत्तरदायित्व को सर्वोच्च माना जाता है। इस दृष्टि से विभीषण का चरित्र अत्यंत प्रासंगिक है।

आधुनिकता का अर्थ परंपरा का पूर्ण निषेध नहीं है, बल्कि परंपरा की तर्कसंगत समीक्षा करते हुए उसके उपयोगी तत्वों को वर्तमान जीवन में स्वीकार करना है। इसी प्रकार किसी भी प्राचीन ग्रंथ की प्रासंगिकता का मूल्यांकन उसके रचनाकाल, सामाजिक संदर्भ तथा वर्तमान आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। रामचरितमानस भी इसी दृष्टि से अध्ययन की अपेक्षा रखता है। इसमें वर्णित अनेक नैतिक मूल्य आज भी मानव जीवन के लिए प्रेरक हैं, जबकि कुछ विचारों की पुनर्व्याख्या आधुनिक संवैधानिक और मानवीय मूल्यों के अनुरूप आवश्यक प्रतीत होती है।

आधुनिक युग में रामचरितमानस की प्रासंगिकता

नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता

आधुनिक युग में विज्ञान, तकनीक और आर्थिक विकास ने मानव जीवन को अनेक सुविधाएँ प्रदान की हैं, परन्तु इसके साथ ही नैतिक मूल्यों का संकट भी गहराता गया है। भ्रष्टाचार, हिंसा, असहिष्णुता, स्वार्थ, प्रतिस्पर्धा, पारिवारिक विघटन तथा मानसिक तनाव जैसी समस्याएँ आज के समाज की प्रमुख चुनौतियाँ हैं। ऐसी परिस्थितियों में रामचरितमानस केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि नैतिक जीवन-दर्शन का महत्त्वपूर्ण स्रोत बनकर सामने आता है।गोस्वामी तुलसीदास ने भगवान राम के चरित्र के माध्यम से सत्य, मर्यादा, करुणा, दया, क्षमा, त्याग, परोपकार और कर्तव्यनिष्ठा जैसे मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा की है। राम का संपूर्ण जीवन इस बात का उदाहरण है कि आदर्श व्यक्ति परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी कठिन हों, अपने धर्म और कर्तव्य से विचलित नहीं होता।राम के वनगमन का प्रसंग नैतिकता और आज्ञापालन का सर्वोत्तम उदाहरण है। पिता के वचन की रक्षा के लिए वे बिना किसी विरोध के राज्य, वैभव और सुखों का त्याग कर देते हैं। इस संदर्भ में तुलसीदास लिखते हैं-

"रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जाए पर वचन न जाई॥"

यह पंक्ति केवल राजवंश की परंपरा नहीं, बल्कि वचनबद्धता और नैतिक उत्तरदायित्व का आदर्श प्रस्तुत करती है। आधुनिक प्रशासन, न्यायपालिका, शिक्षा तथा सामाजिक जीवन में यदि व्यक्ति अपने दायित्वों के प्रति इसी प्रकार प्रतिबद्ध रहे, तो अनेक समस्याओं का समाधान संभव है।रामचरितमानस में परोपकार को मानव जीवन का सर्वोच्च धर्म माना गया है। तुलसीदास जी कहते हैं-

"परहित सरिस धरम नहि भाई, पर पीड़ा सम नहि अधमाई॥"

इस दोहे का भाव यह है कि दूसरों के हित से बढ़कर कोई धर्म नहीं और किसी को कष्ट पहुँचाने से बड़ा कोई अधर्म नहीं। वर्तमान समय में जब समाज जाति, धर्म, भाषा और स्वार्थ के आधार पर विभाजित होता दिखाई देता है, तब यह शिक्षा सामाजिक समरसता और मानवता की स्थापना के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।रामचरितमानस में सत्य और विनम्रता को भी आदर्श जीवन का आधार माना गया है। राम अपने मित्रों, सेवकों, ऋषियों और सामान्य जन के प्रति समान सम्मान का व्यवहार करते हैं। निषादराज, शबरी, सुग्रीव और विभीषण के साथ उनका व्यवहार यह सिद्ध करता है कि महानता पद या शक्ति से नहीं, बल्कि चरित्र और व्यवहार से निर्धारित होती है। यही विचार आधुनिक लोकतांत्रिक समाज में समानता और मानवीय गरिमा के सिद्धांत को भी बल प्रदान करता है।और हनुमान जी का चरित्र सेवा, समर्पण और कर्मयोग का सर्वोच्च उदाहरण है। उन्होंने कभी अपने कार्य का श्रेय स्वयं नहीं

लिया, बल्कि प्रत्येक सफलता का श्रेय श्रीराम की कृपा को दिया। यह विनम्रता आधुनिक नेतृत्व और प्रबंधन के लिए भी अनुकरणीय है।आज की शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा का अभाव स्पष्ट दिखाई देता है। विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा तो बढ़ रही है, परंतु सहानुभूति, सहयोग और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुण अपेक्षाकृत कम होते जा रहे हैं। ऐसे समय में रामचरितमानस के नैतिक आदर्श शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।यद्यपि आधुनिक समाज में नैतिकता की परिभाषा समय के साथ विस्तृत हुई है और मानवाधिकार, लैंगिक समानता तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता जैसे नए मूल्य भी जुड़ गए हैं, फिर भी सत्य, करुणा, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और परोपकार जैसे सार्वभौमिक मूल्य आज भी उतने ही आवश्यक हैं जितने तुलसीदास के समय में थे। इस दृष्टि से रामचरितमानस आधुनिक समाज के लिए नैतिक प्रेरणा का महत्त्वपूर्ण ग्रंथ सिद्ध होता है।

पारिवारिक जीवन एवं सामाजिक समरसता

भारतीय संस्कृति में परिवार केवल रक्त-संबंधों का समूह नहीं, बल्कि नैतिक मूल्यों, प्रेम, त्याग, सहयोग और कर्तव्य का केंद्र माना गया है। वर्तमान समय में तीव्र शहरीकरण, आर्थिक प्रतिस्पर्धा, व्यक्तिवाद और उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण पारिवारिक संबंधों में दूरी बढ़ती जा रही है। संयुक्त परिवारों का विघटन, वृद्धजनों की उपेक्षा, वैवाहिक जीवन में अस्थिरता तथा पीढ़ियों के बीच संवादहीनता आधुनिक समाज की प्रमुख समस्याएँ हैं। ऐसे समय में रामचरितमानस पारिवारिक आदर्शों का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत बनकर सामने आता है।

तुलसीदास जी ने श्री राम जी को आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति और आदर्श राजा के रूप में चित्रित किया है। राम का वनगमन केवल एक धार्मिक घटना नहीं, बल्कि कर्तव्यनिष्ठा और पारिवारिक मर्यादा का अनुपम उदाहरण है। पिता के वचन की रक्षा के लिए उन्होंने राज्य, वैभव और सुख-सुविधाओं का त्याग कर दिया। यह प्रसंग बताता है कि परिवार का आधार अधिकार नहीं, बल्कि कर्तव्य और विश्वास होना चाहिए।

भरत जी का चरित्र भारतीय साहित्य में भ्रातृ-प्रेम का सर्वोच्च उदाहरण है। राज्य उनके सामने था, किंतु उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया और राम की चरण-पादुकाओं को सिंहासन पर स्थापित कर स्वयं सेवक के रूप में राज्य का संचालन किया। भरत का यह त्याग आधुनिक राजनीति और सार्वजनिक जीवन के लिए भी प्रेरणादायक है, जहाँ सत्ता को सेवा का माध्यम माना जाना चाहिए, न कि व्यक्तिगत लाभ का साधन।

लक्ष्मण जी का चरित्र सेवा, समर्पण और त्याग का प्रतीक है। वे चौदह वर्षों तक अपने बड़े भाई के साथ वन में रहते हैं और हर परिस्थिति में उनका साथ निभाते हैं। यह प्रसंग पारिवारिक सहयोग, परस्पर विश्वास और निःस्वार्थ संबंधों की महत्ता को रेखांकित करता है।

सीता जी का चरित्र दाम्पत्य जीवन में समान भागीदारी, साहस और धैर्य का परिचायक है। उन्होंने सुख-सुविधाओं से युक्त राजमहल के स्थान पर अपने पति के साथ कठिन वनजीवन को चुना। आधुनिक संदर्भ में इस प्रसंग का अर्थ यह नहीं है कि स्त्री केवल त्याग का प्रतीक है, बल्कि यह है कि दाम्पत्य संबंध परस्पर विश्वास, सहभागिता और कठिन परिस्थितियों में एक-दूसरे का साथ निभाने पर आधारित होने चाहिए।

माता कौशल्या का वात्सल्य, माता सुमित्रा का विवेक तथा कैकेयी का पश्चाताप यह स्पष्ट करते हैं कि पारिवारिक जीवन में निर्णयों का प्रभाव केवल एक व्यक्ति पर नहीं, बल्कि पूरे परिवार पर पड़ता है। कैकेयी का प्रसंग यह शिक्षा देता है कि स्वार्थ और गलत सलाह परिवार को संकट में डाल सकती है, जबकि संवाद, विश्वास और विवेक परिवार को मजबूत बनाते हैं।रामचरितमानस सामाजिक समरसता का भी महत्त्वपूर्ण संदेश देता है। निषादराज गुह, केवट, शबरी, सुग्रीव और विभीषण जैसे पात्रों के प्रति श्रीराम का सम्मानपूर्ण व्यवहार इस बात का संकेत है कि व्यक्ति का मूल्य उसकी जाति, वंश या सामाजिक स्थिति से नहीं, बल्कि उसके चरित्र और आचरण से निर्धारित होना चाहिए। शबरी के प्रेम और भक्ति को स्वीकार कर राम यह संदेश देते हैं कि सच्ची भक्ति और मानवता किसी सामाजिक भेदभाव से ऊपर है।समकालीन भारत में सामाजिक समरसता राष्ट्रीय एकता की अनिवार्य शर्त है। जातीय, धार्मिक और भाषाई विविधताओं के बीच पारस्परिक सम्मान और सहयोग की भावना विकसित करना आज की आवश्यकता है। इस दृष्टि से रामचरितमानस में वर्णित मानवीय संबंध आधुनिक समाज के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

हालाँकि समालोचनात्मक दृष्टि से यह भी स्वीकार करना आवश्यक है कि रामचरितमानस मध्यकालीन सामाजिक संरचना की उपज है। इसलिए इसके कुछ प्रसंग आधुनिक लैंगिक समानता और सामाजिक न्याय की अवधारणाओं के अनुरूप पुनर्व्याख्या की अपेक्षा रखते हैं। फिर भी प्रेम, त्याग, सेवा, कर्तव्य, सहानुभूति और सामाजिक सद्भाव जैसे सार्वभौमिक मूल्य आज भी उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं जितने तुलसीदास के समय में थे।वर्तमान युग में रामचरितमानस आधुनिक परिवार और समाज के लिए केवल धार्मिक प्रेरणा नहीं, बल्कि मानवीय संबंधों की गरिमा, सामाजिक उत्तरदायित्व और समरसता का जीवन-दर्शन प्रस्तुत करता है।

रामराज्य और सुशासन की अवधारणा

आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था का मूल उद्देश्य जनकल्याण, न्याय, समान अवसर, पारदर्शिता और उत्तरदायी शासन की स्थापना है। यद्यपि रामचरितमानस का रचनाकाल मध्यकाल है, फिर भी उसमें वर्णित रामराज्य की अवधारणा आज भी सुशासन के आदर्श के रूप में चर्चा का विषय बनी हुई है। तुलसीदास ने रामराज्य को केवल राजनीतिक सत्ता का स्वरूप नहीं, बल्कि ऐसी लोककल्याणकारी व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत किया है जहाँ शासक और प्रजा के बीच विश्वास, न्याय, करुणा और उत्तरदायित्व का संबंध हो।रामराज्य का वर्णन करते हुए तुलसीदास एक आदर्श समाज की कल्पना करते हैं। वे संकेत करते हैं कि राम के राज्य में किसी के प्रति वैर-भाव नहीं था-

"बयरु न कर काहू सन कोई..."

इस कथन का आशय यह है कि आदर्श शासन वही है जहाँ सामाजिक शांति, परस्पर विश्वास और सद्भाव का वातावरण हो। आधुनिक भारत में भी संविधान सभी नागरिकों को समान अधिकार प्रदान करता है और सामाजिक सद्भाव को राष्ट्र की शक्ति माना जाता है। इसलिए यह आदर्श आज भी प्रासंगिक है।रामराज्य में शासन का उद्देश्य केवल प्रशासन चलाना नहीं, बल्कि लोकमंगल था। राजा स्वयं को प्रजा का संरक्षक मानता है। श्रीराम अपने व्यक्तिगत सुख से अधिक प्रजा के हित को महत्त्व देते हैं। आधुनिक प्रशासनिक सिद्धांत भी यही कहते हैं कि शासन जनता की सेवा के लिए होता है, न कि शासकों के विशेषाधिकार के लिए।रामराज्य के वर्णन में यह भी संकेत मिलता है कि समाज में भय, अन्याय और शोषण का अभाव था। न्याय सभी के लिए समान था और शासन का आधार धर्म अर्थात् नैतिक कर्तव्य था। आधुनिक संदर्भ में इसका अर्थ किसी विशेष धर्म से नहीं, बल्कि नैतिक शासन, कानून का सम्मान, ईमानदार प्रशासन और जनकल्याणकारी नीतियों से है।आज जब भ्रष्टाचार, प्रशासनिक अनियमितता, सत्ता का दुरुपयोग और सामाजिक असमानता जैसी समस्याएँ लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के सामने चुनौती बनी हुई हैं, तब रामराज्य की अवधारणा हमें उत्तरदायित्व, पारदर्शिता और जनहित की ओर प्रेरित करती है। यदि लोकसेवक स्वयं को जनता का सेवक मानें और नीति-निर्माण में लोकहित को प्राथमिकता दें, तो शासन अधिक प्रभावी और विश्वसनीय बन सकता है।रामराज्य में आर्थिक समृद्धि और सामाजिक सुरक्षा का भी उल्लेख मिलता है। तुलसीदास संकेत करते हैं कि समाज में अभाव, भय और अन्याय कम थे तथा लोग अपने-अपने कर्तव्यों का पालन करते थे। आधुनिक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा भी शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा और समान अवसरों पर बल देती है। इस दृष्टि से रामराज्य की संकल्पना आज भी प्रेरणादायक मानी जा सकती है।

हालाँकि समालोचनात्मक दृष्टि से यह भी स्वीकार करना आवश्यक है कि रामराज्य एक आदर्शीकृत कल्पना है। आधुनिक लोकतंत्र जनता द्वारा चुनी गई सरकार, संविधान, स्वतंत्र न्यायपालिका, मौलिक अधिकारों और संस्थागत उत्तरदायित्व पर आधारित है, जबकि रामराज्य राजतांत्रिक व्यवस्था के अंतर्गत वर्णित है। इसलिए दोनों की संरचना समान नहीं कही जा सकती। फिर भी लोककल्याण, न्याय, उत्तरदायित्व, नैतिक नेतृत्व और प्रजा के प्रति संवेदनशीलता जैसे मूल सिद्धांत आज भी दोनों व्यवस्थाओं को जोड़ते हैं।राजनीतिक चिंतकों का मत है कि किसी भी शासन की सफलता केवल आर्थिक विकास से नहीं, बल्कि नागरिकों के विश्वास, न्यायपूर्ण व्यवस्था और नैतिक प्रशासन से मापी जाती है। इसी कारण रामराज्य का उल्लेख आज भी अनेक सामाजिक और राजनीतिक विमर्शों में आदर्श शासन के प्रतीक के रूप में किया जाता है।अतः कहा जा सकता है कि आधुनिक युग में रामराज्य की प्रासंगिकता उसकी राजतांत्रिक संरचना में नहीं, बल्कि उसके मानवीय और नैतिक मूल्यों में निहित है। यदि शासन पारदर्शी हो, न्याय सबके लिए समान हो, प्रशासन उत्तरदायी हो तथा समाज में शांति, सहयोग और लोककल्याण की भावना विकसित हो, तो रामराज्य की मूल भावना आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी सार्थक रूप से अभिव्यक्त हो सकती है।

समालोचनात्मक दृष्टिकोण

यद्यपि रामचरितमानस में सामाजिक समरसता के अनेक प्रेरक प्रसंग मिलते हैं, फिर भी आधुनिक दलित आलोचना इसके कुछ अंशों और मध्यकालीन वर्ण-व्यवस्था से जुड़े

विचारों पर प्रश्न उठाती है। अनेक विद्वानों का मत है कि तुलसीदास अपने समय की सामाजिक संरचना से पूर्णतः मुक्त नहीं हो सके। दूसरी ओर कुछ विद्वान यह तर्क देते हैं कि रामचरितमानस का मूल संदेश लोकमंगल, भक्ति और मानवीय एकता है तथा उसके मानवीय प्रसंगों को अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए।शोधपरक दृष्टि से दोनों पक्षों का संतुलित मूल्यांकन आवश्यक है। न तो ग्रंथ की केवल प्रशंसा करना उचित है और न ही केवल आलोचना। ऐतिहासिक संदर्भ और समकालीन संवैधानिक मूल्यों-दोनों को ध्यान में रखकर अध्ययन करना ही समालोचनात्मक पद्धति का मूल उद्देश्य है।इस प्रकार रामचरितमानस आधुनिक समाज को सामाजिक समरसता, सह-अस्तित्व, प्रेम, करुणा और मानव-गरिमा का संदेश देता है। साथ ही यह भी संकेत करता है कि परंपरागत ग्रंथों की आधुनिक पुनर्व्याख्या सामाजिक न्याय और समानता के आलोक में निरंतर होती रहनी चाहिए।

रामचरितमानस की सीमाएँ

किसी भी कालजयी कृति का मूल्यांकन केवल उसके गुणों के आधार पर नहीं, बल्कि उसकी सीमाओं के आधार पर भी किया जाता है। रामचरितमानस भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है, किंतु यह भी सत्य है कि इसकी रचना सोलहवीं शताब्दी के सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिवेश में हुई थी। इसलिए इसके कुछ विचार अपने समय की मान्यताओं से प्रभावित हैं।आधुनिक युग में स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श, मानवाधिकार, लोकतंत्र तथा संवैधानिक समानता के विकास के बाद इस ग्रंथ के कुछ प्रसंगों का पुनर्मूल्यांकन किया गया है। उदाहरण के लिए, सीता-निर्वासन का प्रसंग आधुनिक स्त्री-अधिकारों की दृष्टि से बहस का विषय है। इसी प्रकार वर्ण-व्यवस्था से जुड़े कुछ विचारों पर भी आलोचना हुई है।हालाँकि यह भी ध्यान रखना चाहिए कि किसी भी मध्यकालीन ग्रंथ का मूल्यांकन पूरी तरह इक्कीसवीं शताब्दी के मानकों से करना ऐतिहासिक दृष्टि से पर्याप्त नहीं माना जाता। साहित्य अपने समय की सामाजिक परिस्थितियों को भी प्रतिबिंबित करता है। इसलिए रामचरितमानस को उसके ऐतिहासिक संदर्भ, सांस्कृतिक उद्देश्य और लोकमंगल की भावना के साथ समझना आवश्यक है।आधुनिक आलोचना का उद्देश्य ग्रंथ को अस्वीकार करना नहीं, बल्कि उसके उपयोगी पक्षों को स्वीकार करते हुए उन विचारों की पुनर्व्याख्या करना है जो वर्तमान लोकतांत्रिक और संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप नए अर्थ ग्रहण कर सकते हैं। यही समालोचनात्मक अध्ययन की सार्थकता है।अतः यह कहा जा सकता है कि रामचरितमानस की सबसे बड़ी शक्ति उसके मानवीय मूल्य हैं, जबकि उसकी सीमाएँ उसके युगीन सामाजिक संदर्भों से जुड़ी हुई हैं। आधुनिक अध्ययन का उद्देश्य इन दोनों पक्षों का संतुलित मूल्यांकन करना है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध-अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि भारतीय समाज, संस्कृति, दर्शन तथा जीवन-मूल्यों का कालजयी महाकाव्य है। यद्यपि इसकी रचना सोलहवीं शताब्दी में हुई थी, फिर भी इसमें प्रतिपादित अनेक आदर्श आज के वैश्विक, वैज्ञानिक तथा लोकतांत्रिक युग में भी अपनी सार्थकता बनाए हुए हैं। यही इसकी कालजयी शक्ति है।रामचरितमानस में वर्णित सत्य, मर्यादा, करुणा, परोपकार, कर्तव्यनिष्ठा, सेवा, सहिष्णुता, सामाजिक समरसता तथा लोककल्याण जैसे मूल्य आज भी समाज के नैतिक पुनर्निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। वर्तमान समय में जब भौतिकवाद, उपभोक्तावाद, पारिवारिक विघटन, मानसिक तनाव, भ्रष्टाचार तथा सामाजिक असहिष्णुता जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं, तब रामचरितमानस मानव जीवन को नैतिक दिशा प्रदान करने वाली कृति के रूप में सामने आती है।शोध से यह भी स्पष्ट होता है कि रामचरितमानस में चित्रित रामराज्य की अवधारणा आधुनिक लोकतांत्रिक शासन की प्रतिकृति नहीं है, फिर भी लोककल्याण, न्याय, उत्तरदायित्व, सुशासन, संवेदनशील नेतृत्व तथा जनहित जैसे मूल सिद्धांत आज भी आदर्श शासन की आधारशिला माने जाते हैं। इसी प्रकार निषादराज, केवट, शबरी, सुग्रीव और विभीषण जैसे पात्र सामाजिक समरसता, मानव-गरिमा तथा समान व्यवहार के संदेश को पुष्ट करते हैं।समालोचनात्मक अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि रामचरितमानस के कुछ प्रसंग-विशेषकर स्त्री की स्थिति, सीता-निर्वासन तथा वर्ण-व्यवस्था से संबंधित विचार-आधुनिक स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श, मानवाधिकार और संवैधानिक समानता की दृष्टि से पुनर्विचार की अपेक्षा रखते हैं। आधुनिक आलोचना का उद्देश्य ग्रंथ का निषेध नहीं, बल्कि उसके ऐतिहासिक संदर्भ को समझते हुए वर्तमान सामाजिक मूल्यों के आलोक में उसका पुनर्पाठ करना है। यही समालोचनात्मक दृष्टि किसी भी कालजयी कृति को जीवंत बनाए रखती है।निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि रामचरितमानस की वास्तविक प्रासंगिकता उसके बाह्य धार्मिक स्वरूप में नहीं, बल्कि उसमें निहित सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों में है। तुलसीदास ने जिस लोकमंगल, नैतिकता, करुणा, कर्तव्य और सांस्कृतिक समन्वय की स्थापना की, वह आज भी मानव समाज के लिए प्रेरणास्रोत है। साथ ही यह आवश्यक है कि इस ग्रंथ का अध्ययन अंध-श्रद्धा या पूर्वाग्रह से मुक्त होकर वस्तुनिष्ठ, वैज्ञानिक तथा समालोचनात्मक दृष्टि से किया जाए।अतः यह कहा जा सकता है कि रामचरितमानस अतीत की धरोहर मात्र नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी एक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक एवं नैतिक ग्रंथ है। इसकी प्रासंगिकता तभी सार्थक होगी जब इसके मानवीय मूल्यों को आधुनिक लोकतांत्रिक, संवैधानिक तथा मानवतावादी आदर्शों के साथ समन्वित करते हुए समाज के समक्ष प्रस्तुत किया जाए। इस प्रकार रामचरितमानस परंपरा और आधुनिकता के बीच एक सशक्त सेतु के रूप में आज भी अपनी विशिष्ट उपयोगिता बनाए हुए है।

REFERENCES

1. रामचरितमानस। गीता प्रेस, गोरखपुर
2. रामचन्द्र शुक्ल। हिन्दी साहित्य का इतिहास। नागरी प्रचारिणी सभा।
3. हजारी प्रसाद द्विवेदी। हिन्दी साहित्य की भूमिका। राजकमल प्रकाशन।
4. नगेन्द्र। भारतीय साहित्य की प्रवृत्तियाँ। नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
5. नामवर सिंह। इतिहास और आलोचना। राजकमल प्रकाशन।
6. नंदकिशोर नवल। तुलसीदास। राजकमल प्रकाशन।
7. साहित्य अकादेमी। तुलसी साहित्य : विविध आयाम।
8. साहित्य अकादेमी। भारतीय साहित्य (तुलसीदास विशेषांक)।
9. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय। एम.ए. हिंदी अध्ययन सामग्री : भक्ति साहित्य।
10. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। भारतीय साहित्य एवं संस्कृति।